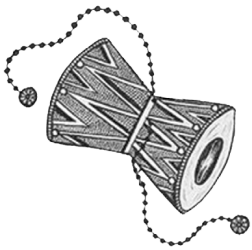

श्री सूक्तम् साधना

विश्वारणे नमस्तुभ्यं नमो विश्व विभूतये
सर्वसामपि सिद्धिनां नमस्ते मूलहेतवे।।

आदिदेवात्मभूताये नारायणकुटुम्बिनि
समस्तजगदाराध्ये नमस्ते पद्मयोनये॥

ओ जगत जननी, जो इस सृष्टि का गौरव हैं, मैं आपकी आराधना करता हूँ। जो मंत्र जप से प्राप्त सभी (आध्यात्मिक) सिद्धियों की मूल कारण हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

आप, जो आदि-देव के समान हैं और नारायण की जीवन सांगिनी हैं, मैं आपको नमन करता हूँ। ओ सम्पूर्ण ब्रह्मांड की इष्टदेवी, पद्मासना, मैं आपके सामने दंडवत प्रणाम करता हूँ।

(लक्ष्मी तन्त्र, अनुवादक—संजुक्ता गुप्ता, मोतीलाल बनरसीदास, 2002)

वर्ष 2008 में मैंने अपने सहयोगी के साथ भारत में व्यवसाय का आरम्भ किया। उसी वर्ष हमने एक फैक्ट्री खरीदी और नई मशीनों का ऑर्डर दिया, पर उनके आने में एक महीने का समय लगने वाला था। उस समय, एक महीने तक हमारी फैक्ट्री में एक कार्यवाहक के अतिरिक्त किसी की आवश्यकता नहीं थी। प्रबंधक (मैनेजमेंट) टीम, फैक्ट्री से 70 किलोमीटर दूर दूसरे शहर में स्थित मुख्यालय से कार्य करने वाली थी।

मैंने इस समय का उपयोग करके 16 रातों की श्री सूक्तम् साधना करने का निश्चय किया।

2010 में मैंने संन्यास ग्रहण किया।

किन्तु देखने वाली बात यह है कि हमारे द्वारा आरम्भ किया गया व्यवसाय अभी भी बहुत अच्छा चल रहा है और पिछले वर्ष कंपनी ने 100 करोड़ का कारोबार किया (हालाँकि संन्यास के बाद मैं किसी भी तरह उस कंपनी से नहीं जुड़ा हुआ हूँ)। निस्सन्देह, इस सफलता का कारण श्री सूक्तम् साधना ही नहीं बल्कि इसका श्रेय मेरे सहयोगी और कर्मचारियों के अथक परिश्रम, बुद्धिमत्ता और अथक कार्यान्वयन को भी जाता है। मेरा मानना है कि जब बीज दिव्य और उत्कृष्ट हो, तो पौधे के बड़े होकर वृक्ष बन जाने की संभावना बहुत अधिक होती है।

ऋग्वेद से उत्पन्न, श्री सूक्तम् साधना सबसे शक्तिशाली साधना है। यह 16 रातों का पुरश्चरण है और यदि इसे विधिवत किया जाए तो आपकी ऊर्जा ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ लयित हो जाती है और आपकी भौतिक प्रगति में सहायक बन जाती है। मैं यहाँ आपके साथ पुरश्चरण की विधि साझा कर रहा हूँ, परन्तु किसी भी साधक को श्री सूक्तम् साधना करने का अधिकार पाने के लिए 960 दिनों तक निष्ठापूर्वक एक विशेष दिनचर्या का पालन करना होगा।

आपको यह सुनकर विश्वास नहीं हो रहा होगा, 960 दिन! "मेरे पास 960 दिनों तक किसी दिनचर्या को पालन करने का न तो समय है और न ही इतना अनुशासन," आप कह सकते हैं। यदि ऐसा है तो मेरी मानें तो आप इस साधना के बारे में आगे पढ़ने का कष्ट न करें और अपना समय व्यर्थ न करें। आप गणेश और गुरु साधना कीजिए। आप इस साधना का पुरश्चरण, बिना किसी दिनचर्या का पालन किए भी कर सकते हैं, किन्तु आपको इसका न के बराबर ही फल मिलेगा। प्रकृति एक ऐसे जहाज़ की तरह है जो अत्यन्त धीरे से मुड़ता है। एक रात की कोई साधना नहीं होती। यदि आप प्रकृति की शक्तियों को मंत्र योग द्वारा संरेखित करना चाहते हैं, जिससे आपका तारतम्य बना रहे, तो उसमें समय लगेगा।

श्री सूक्त पुरश्चरण को सफलतापूर्वक करने के लिए, 960 दिनों तक दिनचर्या का पालन करना अनिवार्य है। इस दिनचर्या के लिए प्रतिदिन सुबह 45 मिनट लगेंगे (स्नान इत्यादि में लगने वाले समय को छोड़कर)।

दैनिक विधि के लिए निर्देश इस प्रकार हैं :

1. 960 दिनों तक आपका नित्यकर्म।
2. प्रतिदिन सुबह स्नान करें।
3. पूजाघर में दीप प्रज्ज्वलित करके अपने माथे पर केसरिया तिलक लगाएँ। यह तिलक बहुत हल्का भी हो सकता है जिससे कि किसी को नहीं दिखे।

एक छोटी सी कटोरी में थोड़ा सा केसर लेकर उसमें कुछ पानी की बूँदें डाल दें। अपनी दाईं अनामिका से केसर के जल का अपने माथे पर तिलक लगाएँ। यही आपका केसर का तिलक है। हर दिन उस कटोरी में कुछ बूँद पानी डाल दीजिए और आवश्यकता पड़ने पर और थोड़ा केसर।

4. श्री सूक्तम् का सुबह स्नान करने के बाद 11 बार जप करें।
5. श्री और विष्णु पर पांच मिनट के लिए ध्यान करें और उन्हें भव्यता से अपने हृदय में बसा लें।
6. हर रात या शाम को श्री सूक्तम् का पांच बार पाठ करें (इस समय स्नान करना योग्य है पर अनिवार्य नहीं)। आप अपने मुंह, हाथ ओर पैर धो लें, कुल्ला करें और तिलक लगा लें। संध्याकाल में पूजाघर में दीप प्रज्ज्वलित करें।
7. सोने से पहले पांच मिनट के लिए ध्यान करें। (आप अपने बिस्तर पर बैठकर भी ध्यान कर सकते हैं।) एक बार और श्री (देवी) और विष्णु को अपने हृदय चक्र में बसाएँ।

इन 960 दिनों की अवधि में आपको पूरी तरह शाकाहारी रहना होगा। किसी भी प्रकार का मांस, समुद्री भोजन या अंडे खाना वर्जित है। आप दुग्ध पदार्थों का सेवन कर सकते हैं, प्याज और लहसुन भी खा सकते हैं। मूल शास्त्रों में दिए गए आदेशों के अनुसार साधक को केवल कपिला गाय के दूध और दुग्ध पदार्थों पर ही निर्वाह करना होता है। पर मैं आपको अपनी प्रक्रिया बात रहा हूँ जिसका मुझे लाभ मिला। परम्परा मंत्र विज्ञान का मूल सिद्धान्त है। यदि आप मेरे संप्रदाय का पालन करते हैं तो आपको केवल इस पुस्तक में दिए गए निर्देशों का पालन करना है। इन 960 दिनों की अवधि में ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्य नहीं है, किन्तु 16 दिनों के पुरश्चरण में आपको ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा।

यदि आप अनजाने में कोई वर्जित वस्तु खा लेते हैं (जैसे केक या बिस्किट जिसमें अंडा हो या जेलटिन वाले पदार्थ), या ऊपर दिए गए छह नियमों में से किसी भी नियम को भंग करते हैं तो आपको प्रायश्चित करना होगा। इस साधना के लिए प्रायश्चित की प्रक्रिया मैंने इसी अध्याय में आगे दी है।

किन्तु यदि आप जानबूझकर किसी भी नियम का पालन नहीं करते तो आपकी साधना असन्तोषपूर्ण रह जाएगी। आपको गिनती रोककर दोबारा साधना आरम्भ करनी होगी।

यदि आप ऊपर दिए गए किसी भी नियम का किसी वास्तविक बीमारी या

अस्वस्थता के कारण पालन नहीं कर पा रहे हैं तो आप कुछ समय बाद क्षतिपूर्ति कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी चोट या बीमारी के कारण आप एक दिन स्नान नहीं कर पाए तो आपको अगले दिन दुगनी संख्या में मंत्रजप और दुगने समय तक ध्यान करना होगा। वैसे ही, यदि आप हवाई जहाज में लम्बी यात्रा कर रहे हैं, और इसलिए सुबह स्नान नहीं कर पाए, तो आपको इसकी क्षतिपूर्ति अगले दिन दुगनी साधना और ध्यान करके करना होगा।

इस नियम को निष्ठापूर्वक तीन वर्षों तक पालन करें और आप देवी माँ के परिवर्तनकारी पुरश्चरण के लिए तैयार हो जाएँगे।

साधना की अवधि

इस पुरश्चरण को पूरा करने में 16 रातें लगती हैं, पर जैसा मैंने पहले कहा, आदर्शत: साधक को 960 दिनों तक नित्य विशेष दिनचर्या का पालन करना होगा।

साधना कब आरम्भ की जाती है

श्री सूक्तम् का पुरश्चरण वर्ष में एक ही बार किया जा सकता है। इसका आरम्भ दीपावली की रात को होता है। जब आप पुरश्चरण को दीपावली की रात को आरम्भ करेंगे, इसका अन्त सोलह दिनों बाद होगा। पंचांग से दीपावली कि तिथि पता कर लीजिए। दीपावली भी हर वर्ष भिन्न तिथि पर आती है क्योंकि सनातन धर्म में पंचांग चन्द्र के अनुसार होता है।

यह साधना कौन कर सकता है

किसी भी आयु, धर्म, क्षमता या वर्ग के व्यक्ति इस साधना को बिना दीक्षा के कर सकते हैं। मासिक धर्म के समय भी स्त्रियां इस साधना को बिना रुकावट के जारी रख सकती हैं। आपको पुरश्चरण की अवधि में पूरी तरह ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा। हालाँकि स्वप्न दोष या अनैच्छिक वीर्यपात से कोई दोष नहीं होगा।

भोजन

16 दिनों के पुरश्चरण की अवधि में आपके लिए शाकाहारी भोजन करना अनिवार्य है। दुग्ध पदार्थों का सेवन करने की अनुमति है किन्तु मांस, समुद्री जीव, और अंडे वर्जित हैं। आप प्याज और लहसुन भी नहीं खा सकते। बिस्कुट, केक, चीज़ इत्यादि खाने से पहले ध्यान रखें क्योंकि उनमें कई प्रकार के पशु-उत्पाद हो सकते हैं।

दीप

इस पुरश्चरण में किसी भी धातु से बने दीप का उपयोग किया जा सकता है। मिट्टी के दिये का भी प्रयोग किया जा सकता है। बाती सूत की होनी चाहिए। आप गुँथी हुई बाती (या मौली जैसी अन्य धागे की भी बाती) का प्रयोग कर सकते हैं। दीप के लिए शुद्ध घी या तिल के तेल का उपयोग करें। यदि आप साधना किसी ठंडे प्रदेश में कर रहे हैं (और क्योंकि दीपावली ठंड के मौसम में आती है, विश्व के कई भाग बहुत ही ठंडे हो सकते हैं), तो मैं आपको तिल के तेल का उपयोग करने की सलाह दूँगा क्योंकि ठंड में घी जम जाता है और आपका दीप बुझ सकता है।

दिशा

साधक को पूर्व, उत्तर या उत्तर पूर्व की ओर मुख करके जप या यज्ञ करना चाहिए।

वस्त्र

आप लाल रंग के ही वस्त्र पहन सकते हैं। आपके शरीर पर दो से अधिक लाल वस्त्र नहीं होने चाहिए। एक वस्त्र आपके शरीर के ऊपरी भाग को ढकने के लिए और दूसरा, शरीर के निचले भाग को ढकने के लिए। यदि आप बहुत ही ठंडे क्षेत्र में रहते हैं तो आप अपने कमरे में हीटर लगा सकते हैं या अपने उत्तरीय में ऊनी शॉल जोड़ सकते हैं। स्त्रियां साड़ी, ब्लाउस इत्यादि पहन सकती हैं। स्त्रियों को इस साधना को उन सोलह दिनों की अवधि में उनके मासिक धर्म के समय भी जारी रखने की अनुमति है। यह एक तान्त्रिक साधना है और साधक के लिंग, लैंगिकता और जीवतत्व के आधार पर किसी प्रकार के प्रतिबंध नहीं होते।

आसन

कम्बल सबसे उत्तम आसन होता है और आप उसपर लाल कपड़ा बिछा दें। आपके वस्त्र और आसन का रंग लाल ही होना चाहिए। यह साधना ऐसी है कि इसके करते समय आपको धरती पर बैठना होता है। यदि आप नीचे नहीं बैठ सकते तो कुर्सी पर बैठकर, एक टेबल पर दीप, पात्र इत्यादि रखकर भी साधना कर सकते हैं। मैंने स्वयं ऐसा नहीं किया है; पर आप अपना अनुभव हमारे साथ साझा अवश्य कीजिए। कम्बल के अतिरिक्त आप मेडिटेशन या ध्यान कुशन, या सूत से बने किसी भी आसन का प्रयोग कर सकते हैं। इस साधना के लिए कुश का आसन भी मान्य है।

अंग विन्यास

मंत्र का अत्यन्त सजगता, श्रद्धा और भक्ति के साथ जप करते समय अपने शरीर को स्थिर रखें। मैं आपको याद दिला दूँ कि मंत्र साधना केवल अंधाधुंध जप नहीं होती। यह एक भावपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें आप अपने देवता के साथ एक हो जाते हैं, जिससे आपका आध्यात्मिक, भौतिक और भावनात्मक उत्थान हो।

साधना के लिए आवश्यक सामग्री

1. दीप (चाँदी, पीतल या किसी भी धातु से बना; मिट्टी का दीपक भी मान्य है)
2. दीप प्रज्ज्वलित करने के लिए घी
3. सोलह रात्रियों के लिए 16 बातियां
4. जल के लिए पांच पात्र, एक चम्मच और छोटी सी थाली। यह चाँदी, ताँबे या पीतल के हो सकते हैं। यह सभी साधनाओं के लिए अनिवार्य वस्तु हैं। पात्रों के यथाक्रम व्यवस्थापन की विस्तृत जानकारी मैंने *विस्तृत जानकारी* वाले भाग में दी है।
5. मिठाई, गुड़ या मधु (मधुपर्क बनाने के लिए)
6. 16 दिनों में हर दिन यज्ञ करने के लिए अलग सामग्री की आवश्यकता होती है। उनका उल्लेख हर दिन की जानकारी के साथ किया गया है। (जिसका विवरण यज्ञ नामक अध्याय में दिया गया है)
7. इन सामग्रियों के अतिरिक्त आपको लकड़ी की आवश्यकता होगी। आप पीपल, आम या पलाश की लकड़ी का प्रयोग कर सकते हैं। आप देवदारु, या शीशम की लकड़ी का भी उपयोग कर सकते हैं।
8. रुद्राक्ष या कमल गट्टे से बनी जपमाला।
9. बहुत सारी भक्ति, श्रद्धा और अनुशासन।

मेरा परामर्श है कि इस अध्याय को पढ़ने के बाद नीचे दिए गए 36 चरणों के अनुसार एक दैनिक सूची तैयार कर लें। इसके अतिरिक्त सभी आवश्यक सामग्रियों की सूची बनाकर पहले से सब कुछ लाकर रख दें जिससे आप साधना को किसी आवश्यक सामग्री की कमी के कारण पूरी करने से वंचित रह जाएँ।

मंत्र

इस साधना का मंत्र 16 रात्रियों के लिए भिन्न होता है। मैंने हर रात्रि के लिए मंत्र

इस अध्याय में आगे दिए हैं।

प्रारम्भ से पूर्व

यह साधना दीपावली की रात को आरम्भ की जाती है। साधना आरम्भ करने से एक रात पूर्व (अर्थात् दीपावली से पहले की रात) आपको वेदमाता गायत्री की अनुमति लेनी होगी। ऐसा करने के लिए सूर्यास्त के बाद स्नान करके अपने पूजा घर में बैठें। दाएँ हाथ में थोड़ा सा जल लेकर मानसिक रूप से देवी माँ का गायत्री के रूप में आह्वान करें। उनसे और प्रकृति की अन्य शक्तियों से अपनी साधना को पूरी करने की अनुमति मांगें। जल को अपने पास रखी छोटी सी थाली में छोड़ दें।

अब रुद्राक्ष या चन्दन की जप माला के साथ सवितुर गायत्री मंत्र की 30 आवृत्तियां जपें। यदि आपने पहले गायत्री मंत्र के जप के लिए किसी अन्य जपमाला का प्रयोग किया है तो आप उसी का उपयोग कर सकते हैं। इस बात का ध्यान रखें कि आप इस जपमाला का प्रयोग गायत्री मंत्र जप के अतिरिक्त किसी मंत्र के लिए न करें, श्री सूक्तम् के लिए भी नहीं।

एक आवृत्ति 108 बार मंत्र जप की होती है। 30 आवृत्तीयां 108 x 30 = 3,240 बार के बराबर होती हैं। मैं किसी भी प्रधान पुरश्चरण से पहले 10,000 बार मंत्र जाप करता हूँ। किन्तु, 30 आवृत्तियां पर्याप्त होंगी। 30 आवृत्तियों की समाप्ति के बाद आप उसी स्थान पर सो जाएँ जहाँ पर आपने गायत्री मंत्र जाप किया था। आपके लिए गायत्री मंत्र दे रहा हूँ।

ॐ भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात॥

मूल स्तोत्र— श्री सूक्तम्

यह सम्पूर्ण साधना श्री सूक्तम् पर आधारित है जिसमें 16 श्लोक हैं। हर रात एक श्लोक का आह्वान होता है इसलिए यह साधना 16 रात्रियों की होती है। आप के लिए नीचे श्रीसूक्तम और उसका अर्थ दिया गया है।

1.	हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

2.	तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥
3.	अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥
4.	कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
5.	चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥
6.	आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
7.	उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
8.	क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥
9.	गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
10.	मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
11.	कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥
12.	आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

13.	आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
14.	आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥
15.	तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पूरुषानहम्॥
16.	यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥

	अर्थ
1.	हे अग्निदेव! सुवर्ण जैसी तेजस्वी, सुंदर पीले वर्ण की, सोने और चाँदी के हार पहनने वाली, चन्द्रमा के समान प्रसन्नकान्ति, और धन एवं समृद्धि की मूर्तरूप लक्ष्मीदेवी को मेरे लिये आवाहन करिए।
2.	हे अग्निदेव! उन लक्ष्मीदेवी का मेरे लिए आह्वान करें जो मेरे साथ रहकर मुझे स्वर्ण, गौ, अश्व तथा सेवक आदि प्राप्त करने का आशीर्वाद दें।
3.	मैं उन श्री का आह्वान करता हूँ जो समृद्धि की देवी हैं और जिनके आगे घोड़े तथा उनके बीच में रथ रहते हैं और जिनके आगमन की घोषणा हस्तिनाद से होती हैं। वही श्रीदेवी मुझे आशीष दें।
4.	मैं उन लक्ष्मी देवी का यहाँ आवाहन करता हूँ जो स्वर्ण के समान तेजोमयी स्मितमुखी, दयार्द्र, समृद्धि की देवी हैं, परमानंद की मूर्तरूप, अपने भक्तों पर अनुग्रह करनेवाली, कमल के आसन पर विराजमान हैं।
5.	मैं चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्तिवाली, सुन्दर द्युतिशालिनी, यश से दीप्तिमान, देवगणों के द्वारा पूजिता, उदारशीला, पद्महस्ता लक्ष्मीदेवी की शरण ग्रहण करता हूँ। मेरा दुर्भाग्य दूर हो जाए। मैं आपका आह्वान करता हूँ।

	अर्थ
6.	हे सूर्य के समान प्रकाश-स्वरूपे! आपके ही तप के फलस्वरूप वृक्षों में श्रेष्ठ मंगलमय बिल्व वृक्ष उत्पन्न हुआ। ऐसे तप के फल मेरे अपवित्र विचारों और अज्ञानतापूर्ण कृत्यों से उत्पन्न अमंगल को दूर करें।
7.	देवी माँ! मैं एक धन्य राष्ट्र में रहता हूँ। कुबेर और कीर्ति मुझे प्राप्त हों। देवगण मुझे धन और यश प्रदान करें।
8.	देवी माँ, आपकी कृपा और मेरे प्रयासों से मैं दारिद्र्य (अलक्ष्मी), पिपासा और भूख को दूर करना चाहता हूँ। ओ लक्ष्मी देवी! मेरे घर से सब प्रकार के दारिद्र्य और अमंगल को दूर करो।
9.	उन लक्ष्मी देवी का मैं यहाँ अपने घर में आवाहन करता हूँ जो सभी जीवों की नियंता हैं, जिन्हें उनकी सुगंध से अनुभव किया जा सकता है; वह जो पराजय और भय से परे हैं और सब भूतों की स्वामिनी हैं।
10.	ओ देवी माँ! मन की कामनाओं और संकल्प की सिद्धि एवं वाणी की सत्यता मुझे प्राप्त हो। हमें अपार धन धान्य की प्राप्ति हो। आपके भक्त में समृद्धि और प्रसिद्धि का वास हो।
11.	हे कर्दम ऋषि, आपसे से जो उत्पन्न हुई हैं, उन्हें मेरे साथ रहने दें। कर्दम ऋषि! धन-धान्य की देवी, सृष्टि की जननी, जो कमलों की माला धारण करती हैं, हमारे परिवार में आपका निवास हो।
12.	जल स्निग्ध पदार्थों (मक्खन जैसे) का सृजन करे। ओ चिक्लीत! आप भी मेरे घर में वास करें और माता लक्ष्मी देवी का मेरे परिवार में निवास कराए।
13.	ओ जातवेद! आर्द्रस्वभावा, पीतवर्णा, पद्मों की माला धारण करने वाली, चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्ति से युक्त, स्वर्णमयी लक्ष्मीदेवी का मेरे यहां आवाहन करें।
14.	ओ जातवेद! जो कोमल स्वभाव की हैं, मंगलदायिनी, सरोवर में रहने वाली, सुवर्णमालाधारिणी, सूर्यस्वरूपा तथा हिरण्यमयी हैं, सूर्य के समान दैदीप्यमान उन लक्ष्मीदेवी का मेरे लिये आवाहन करें।

	अर्थ
15.	ओ जातवेद! उन लक्ष्मी को मेरे पास लाएँ जो मेरा कभी परित्याग नहीं करेंगी, और जिन लक्ष्मी देवी की कृपा से मुझे बहुत-सा धन, गौ, दासियाँ, अश्व और दास आदि प्राप्त हों।
16.	जिसे लक्ष्मी और समृद्धि की कामना हो, वह प्रतिदिन पवित्र और संयमशील होकर अग्नि में घी की आहुतियाँ दे तथा श्री सूक्त का निरन्तर पाठ करें।

पुरश्चरण की विधि

जैसा मैंने पहले भी उल्लेख किया है, यदि आपने नित्य कर्म का लगभग तीन वर्ष तक नियमित रूप से पालन किया है, आप निश्चित पुरश्चरण के लिए तैयार हैं। किन्तु, यदि आपने लगभग तीन वर्षों तक, या कभी भी नित्यकर्म का पालन नहीं किया है, तो भी आप एक झलक पाने के लिए इस साधना को कर सकते हैं। पर मुझे शंका है कि पहले 960 दिनों तक नित्यकर्म का पालन न करके आपको किस प्रकार के परिणाम मिलेंगे।

16 रात्रियों तक हर रात्रि आप एक भिन्न मंत्र का आह्वान करेंगे। किन्तु, हर रात्रि किए जाने वाले पहले कुछ चरण समान होंगे। 16वां चरण (संकल्प) केवल पहली रात्रि को ही किया जाएगा। अन्य सभी रात्रियों को आपको इस चरण को नहीं करना है। सारे चरण इस प्रकार हैं। ध्यान रहे कि हर चरण का विस्तृत विवरण और उन्हें करने के निर्देश *पुरश्चरण* नामक अध्याय में दिए गए हैं। जहाँ भी यह साधना सामान्य निर्देशों से भिन्न हैं, मैंने उनकी जानकारी उस चरण में ही दी हैं।

याद रहे कि इस साधना को आरम्भ करने के पूर्व आपको एक रात पहले वेदमाता गायत्री की अनुमति लेनी होगी। इसी अध्याय के *प्रारम्भ से पूर्व* भाग में मैंने इस प्रक्रिया का वर्णन किया है।

श्री सूक्तम् साधना के 36 चरण इस प्रकार हैं :

1 स्नान

यह साधना सूर्यास्त के बाद प्रारम्भ होती है। यदि आपने सुबह स्नान कर भी लिया है—जो हर साधक को करना चाहिए—आप साधना से पहले रात को स्नान अवश्य करें।

2. स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

3. मंदिर या पूजा की वेदी को स्वच्छ करें (गर्भगृह या पूजा घर में प्रवेश करें) पूजा घर की वेदी में पात्रों को विधि अनुसार यथाक्रम व्यवस्थापन (पात्रासादन) करें। उपयोग से पहले रोज़ सभी पात्रों और दीप को स्वच्छ करें।
4. आसपास के स्थान को पवित्र करें।
5. अपना पवित्रीकरण (आचमन) करें। हाथ साफ करें (हस्त प्रक्षालन)।
6. दीप प्रज्ज्वलित करें। (इसी समय आप अगरबत्ती या धूप भी जला सकते हैं)
7. गणेश का आह्वान करें।
8. गणेश की तीन मुद्राएँ दर्शाएँ।
9. वैदिक मंत्र-स्वस्तिवचन का उच्चारण करें।
10. गुरु ध्यान करें।
11. गुरु मंत्र जप करें।
12. सभी सिद्धों का अभिवादन करें।
13. इष्ट ध्यान करें। यदि आप किसी विशेष देवता की पूजा करते हैं, तो उनकी प्रार्थना करें। नहीं तो देवी माँ का नीचे दिए गए मंत्रों के उच्चारण के साथ ध्यान करें।

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि स्फुरत्
तारा नायक शेखरां स्मितमुखी मापीन वक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चष्हकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्न घटस्थ रक्तचरणां ध्यायेत् परांम्बिकाम्॥

देवी माँ का ध्यान करें जिसका शरीर सिन्दूर की लाल रंग का है; जिनके तीन नेत्र हैं, जो माणिक्य और अर्धचन्द्र से सुशोभित मुकुट धारण किए हुए हैं; जिनके चेहरे पर करुणामयी सुन्दर मुस्कान है; जिनके अंग सुन्दर हैं, जिनके हाथों में रत्न जड़ित सोने का पात्र जिसमें मधु और जल का अमृत समान मिश्रण है और दूसरे में लाल कमल का पुष्प।

14. **इष्ट मंत्र जप**
इष्ट मंत्र जप करें। यदि आपको किसी मंत्र की दीक्षा दी गई है तो उसका 11, 21, या 31 बार जप करें। यदि आपको गुरु से ऐसी कोई दीक्षा नहीं

मिली है तो इस साधना के मंत्र का जाप करें (हर रात्रि के लिए भिन्न मंत्र हैं, इसलिए हर रात्रि के लिए दिए गए विशेष मंत्र का जाप करें।

15. पृथ्वी पूजा करें।
16. संकल्प लें
    यह साधना की पहली रात को किया जाता है। आपको संस्कृत के नियमित संकल्प मंत्र का उच्चारण करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसके लिए आपको पंडित को बुलाकर उनसे सही तिथि, ग्रहदशा और संकल्प के लिए आवश्यक ज्योतिष सम्बन्धी जानकारी लेनी पड़ेगी। अथवा आपको इनका स्वयं ज्ञान होना चाहिए। इस प्रक्रिया में त्रुटियों की संभावना अधिक होगी। इसलिए, सरल यही होगा कि आप अपने संकल्प का ज़ोर से उच्चारण करके ब्रह्मांड से संधि कर लें। आप ऐसा किसी भी भाषा में कर सकते हैं। संकल्प के सूत्र पुरश्चरण के अध्याय में 16वें चरण में दिए गए हैं।
17. मंत्र श्वास
18. विनियोग:
    यह प्रक्रिया 16 रात्रियों के अवधि में हर रात्रि के लिए भिन्न है। उनकी जानकारी प्रत्येक रात्रि के लिए दिए भाग में हैं।
19. कर शुद्धि
    इन मंत्रों का जप करते हुए कर शुद्धि के लिए नीचे दी गई मुद्राओं को दर्शाएँ।

संस्कृत (देवनागरी)	मुद्रा	दोनों हाथों से
ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः।		अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।		अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।

संस्कृत (देवनागरी)	मुद्रा	दोनों हाथों से
श्रीं मध्यमाभ्यां नमः।		अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
ऐं अनामिकाभ्यां नमः।		अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।		अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
श्रीं करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः।		बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

20. मंत्र न्यास:
    इस साधना में हर रात्रि, मंत्र न्यास भिन्न होती है। मैंने हर रात्रि के लिए दिए गए भाग में उपयुक्त मंत्र न्यास की जानकारी दी है।
21. पूर्व मंत्र जप
    न्यास पूर्ण करने के बाद उस रात्रि के लिए दिए गए विशेष मंत्र का 16 बार जप करें।
22. पूर्व मुद्रा

इन चार मुद्राओं को दर्शाएँ:

मुद्रा	मुद्रा	दोनों हाथों से दर्शाएँ
धेनु		दाईं तर्जनी से बाईं मध्यमा के पोर को स्पर्श करें, और बाईं तर्जनी का दाईं मध्यमा के पोर से स्पर्श होना चाहिए। दाईं अनामिका से बाईं कनिष्ठिका के पोर को स्पर्श करें और साथ-साथ बाईं अनामिका का दाईं अनामिका के पोर पर स्पर्श होना चाहिए। दोनों अंगूठों के पोर को जोड़ दें और हाथों को नीचे की ओर मोड़ दें।
कलश		दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और उसे बाए हाथ से पकड़ लें। कलश मुद्रा को करने का एक अन्य तरीका: दोनों हाथों की मुट्ठी बनाकर, उन्हें आपस में स्पर्श करें।
मत्स्य		सभी उंगलियों को जोड़कर अंगूठे को बाहर की ओर फैला लें। अब दाएँ हाथ को बाएँ हाथ पर रखें।
पाश		तर्जनी की उँगलियों को एक दूसरे में अटकाते हुए, दाएँ हाथ को नीचे की ओर लटकने दें।

23. षोडशोपचार

हर रात्रि नीचे दी गई 16 भेंट या उपचार चढ़ाएँ:

i) **पहले श्लोक का आह्वान करें**

दोनों हथेलियों को हृदय के पास नमस्कार मुद्रा में जोड़ लें। देवी की कृपा का आह्वान करने के लिए इस श्लोक का उच्चारण करें।

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।

ii) **दूसरे श्लोक क साथ स्वागत करें**

देवी के आगमन के विश्वास के साथ उनके स्वागत के लिए दूसरे श्लोक का उच्चारण करें।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥

iii) **तीसरे श्लोक के साथ आसन समर्पित करें**

श्री सूक्तम के तीसरे श्लोक के साथ उन्हें आसन समर्पित करें।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

iv) **अर्घ्य और पाद्य समर्पित करें**

चौथे श्लोक के साथ उन्हें जल समर्पित करके उनके चरण धोएँ। अर्घ्य पात्र से जल लेकर अपने बगल में रखी छोटी सी थाली में डाल दें। अब पाद्य वाले पात्र से जल लेकर छोटी थाली में डालें। इस श्लोक का एक ही बार उच्चारण किया जाना चाहिए।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

v) **पांचवे श्लोक के साथ आचमन करें**

यह साधक द्वारा किया गया आचमन नहीं है, पर देवी को समर्पित आचमन है। इसे करने के लिए आचमन पात्र से जल लेकर अपने पास रखी छोटी सी थाली में डाल दें।

चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥

vi) **छठे श्लोक के साथ अर्घ्य प्रदान करें**

इस श्लोक का उच्चारण करते हुए अर्घ्य पात्र से एक चम्मच जल लेकर अपने पास रखी छोटी सी थाली में डाल दें।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

vii) **मानसिक रूप से देवी का स्नान करवाएँ**

पाद्य वाले पात्र से एक चम्मच जल लेकर अपने पास रखी छोटी सी थाली में डाल दें। नीचे दिए गए श्लोक का उच्चारण करें।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

viii) **आठवें श्लोक के साथ वस्त्र समर्पित करें**

दो फूल या दो स्वच्छ वस्त्र लेकर देवी के चरणों के पास रख दें। यदि आप किसी भी मूर्ति या यन्त्र का प्रयोग नहीं कर रहे हैं तो इसे दीप के पास रख सकते हैं। (ध्यान रहे कि वस्त्र दीप से थोड़ी दूरी पर हों जिससे आग लगने का खतरा न हो।)

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

ix) **श्री सूक्तम के 9वें श्लोक के साथ आभूषण समर्पित करें**

आभूषण के रूप में एक पुष्प लेकर देवी, यन्त्र या दीपक को समर्पित करें। नीचे दिए गए श्लोक का उच्चारण करें।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥

यदि आपकी आर्थिक परिस्थिति सुदृढ़ है तो आप पूरे वस्त्र, सोने या चाँदी के आभूषण इत्यादि भी देवी को समर्पित कर सकते हैं। 16 दिनों की समाप्ति पर आप इनको किसी ऐसे व्यक्ति को दान कर सकते हैं जो देवी के उपासक हैं या सात्विक जीवन व्यतीत करते हैं। दान के प्राप्तकर्ता स्त्री या पुरुष हो सकते हैं।

x) **10वें श्लोक के साथ परिमल या सुगंध अर्पित करें**

नीचे दिए गए श्लोक का उच्चारण करते हुए सुगंधित जल के पात्र से एक चम्मच जल लीजिए और अपने पास रखी छोटी थाली में डाल दीजिए।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥

xi) **11वें श्लोक के साथ पुष्प समर्पित करें**

एक या अधिक पुष्प लेकर नीचे दिए श्लोक का उच्चारण करते हुए पुष्पों को दीप के पास रखें।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥

xii) **12वें श्लोक के साथ धूप या अगरबत्ती दर्शाएँ**

यदि आपने धूप या अगरबत्ती जलाई है तो उसे दक्षिणावर्त या घड़ी की सूई की दिशा में दीप, मूर्ति या यंत्र के सामने घुमाएँ।। यदि आपने धूप या अगरबत्ती नहीं जलाई है तो आंखें बन्द करके मानसिक रूप से अर्पित करें। नीचे दिए गए श्लोक का उच्चारण करें।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥

xiii) **13वें श्लोक के साथ दीप दर्शाएँ**

यदि आपने मूर्ति, चित्र या यन्त्र के सामने दीप प्रज्ज्वलित किया है, तो उसे उठाकर एक बार दक्षिणावर्त या घड़ी की सूई की दिशा में, इस मंत्र का उच्चारण करते हुए घुमाएँ। यदि आप दीप की ही पूजा कर रहे हैं तो उसके आधार को स्पर्श करते हुए मंत्र का उच्चारण करें।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

xiv) **14वें श्लोक के साथ मधुपर्क चढ़ाएँ**

सामान्यत: मधुपर्क घी और मधु के मिश्रण से बनता है। सरलता के लिए आप केवल मधु, गुड़ या किसी भी मिठाई का देवी को भोग लगा सकते हैं। नीचे दिए श्लोक का उच्चारण करें। पूजा की समाप्ति पर आप इस भोग को किसी को भी बांट सकते हैं। यदि आपके साथ कोई नहीं है तो आप उसे स्वयं ग्रहण कर सकते हैं।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

xv) **15वें श्लोक के साथ प्रपन्न आरती के साथ स्तुति करें**

दोनों हाथों को नमस्ते मुद्रा में हृदय के पास रखे और इस श्लोक का उच्चारण करें।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पूरुषानहम्॥

xvi) **श्री गायत्री का अभिवादन**

16वें समर्पण के लिए 16वें श्लोक का उच्चारण नहीं किया जाता। उसके स्थान पर लक्ष्मी गायत्री मंत्र का उच्चारण किया जाता है। वह इसलिए कि 16 वां श्लोक इस स्तोत्र की फलश्रुति का रूप होती है जो इसके उच्चारण के लाभ का वर्णन करती है।

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णु पत्नी च धीमहि
तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात्।

षोडशोपचार सम्पूर्ण करने के बाद आप पुरश्चरण के 24वें चरण के लिए तैयार हैं।

24. मंत्र संस्कार

इस साधना में मंत्र संस्कार की आवश्यकता नहीं है।

25. मंत्र ध्यान

हर रात्रि देवी माँ को यह प्रार्थना अर्पित करें। इसके साथ आपके 25 चरण पूरे हो जाएँगे। अब आप अगले चरण के अनुसार मंत्र जप के लिए तैयार हैं।

विश्वारणे नमस्तुभ्यं नमो विश्वविभूतये
सर्वसामपि सिद्धिनां नमस्ते मूलहेतवे।।

आदि देवात्मभूताये नारायणकुटुम्बिनि
समस्तजगदाराध्ये नमस्ते पद्मयोनये॥

ओ जगत जननी, जो इस सृष्टि का गौरव हैं, मैं आपकी आराधना करता हूँ। जो मंत्र जप से प्राप्त सभी (आध्यात्मिक) सिद्धियों की मूल कारण हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ। आप, जो आदि-देव के समान हैं और नारायण की जीवनसांगिनी हैं, मैं आपको नमन करता हूँ। ओ सम्पूर्ण ब्रह्मांड की इष्टदेवी, पद्मजा, मैं आपके सामने दंडवत प्रणाम करता हूँ।

26. मूल मंत्र जप

आपको याद होगा कि श्रीसूक्तम में 16 श्लोक हैं और आप हर रात्रि एक

भिन्न श्लोक का उच्चारण करेंगे। हर रात्रि श्लोक से पहले और अन्त में कुछ बीज-अक्षरों को जोड़ दिया जाता है। हर रात्रि आपका मंत्र अलग होगा। मंत्र उच्चारण की संख्या भी हर रात्रि अलग होगी। पुरश्चरण की विधि के सभी चरणों के अन्त में मैंने हर दिन के लिए निर्देश और आवश्यकतायें दी हैं। इस समय, मैं आपके लिए अगले चरणों का क्रमश: उल्लेख करता हूँ।

27. उत्तर मुद्रा
जप पूरा करने के बाद पुरश्चरण नामक अध्याय में दिए 27वें चरण के अनुसार मुद्राएँ दर्शाएँ।

28. जप समर्पण
जप को अपने देवी को समर्पित करें। इसकी विधि आपको पुरश्चरण नामक अध्याय में दिए 28वें चरण में मिल जाएगी।

29. विसर्जन
इस चरण में आप उन सभी ऊर्जाओं को विदा कर रहे हैं, जिन्होंने उस रात्रि को आपकी साधना में भाग लिया। इसके लिए पुरश्चरण नामक अध्याय में दिए 29वें चरण में दी गई विधि का पालन करें।

30. क्षमा प्रार्थना
इस साधना की प्रक्रिया में आपसे जाने-अनजाने में अज्ञानतावश हुई त्रुटियों के लिए क्षमायाचना करने का अवसर है। क्षमा प्रार्थना मंत्र और उसकी विधि पुरश्चरण नामक अध्याय में दिए 30वें चरण में दी गई है।

31. यज्ञ
यज्ञ की विधि, इसी नाम के अध्याय में दी गई है। इस साधना के लिए आपको हर रात्रि अलग सामग्रियों की आवश्यकता होगी। मैंने उनका उल्लेख हर रात्रि के लिए दिए भाग में किया है।

32. तर्पण
पुरश्चरण नामक अध्याय में दिए 32वें चरण में दी गई विधि का पालन करें। तर्पण के मंत्र भी हर रात्रि के भिन्न हैं और उन्हें मैंने हर रात्रि के भाग में स्पष्ट किए हैं।

33. मार्जन या अभिषेक
पुरश्चरण नामक अध्याय में दिए 33वें चरण में दी गई प्रक्रिया के अनुसार करें। मैंने हर रात्रि के लिए मार्जन के मंत्र नीचे दिए गए नोट्स में साझा किए हैं।

34. साधक भोजन या ब्राह्मण भोज
    जब तक आप रात के जप, यज्ञ, इत्यादि सम्पूर्ण करेंगे, प्रातःकाल हो जाएगा। आप किसी देवी उपासक को कुछ धनराशि दान कर सकते हैं जिससे वह स्वयं भोजन खरीद सके। नहीं तो आप स्वयं भोजन पकाकर उसे सुबह के नाश्ते के रूप में परोस सकते हैं। आप चाहें तो भोजन किसी और से बनवाकर स्वयं परोस सकते हैं। ये आप अपनी इच्छा और सुविधा अनुसार करें। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसे दया-भाव के साथ किया जाए।
35. पुनः क्षमा प्रार्थना
    30वें चरण से लेकर 34वें चरण में हुई त्रुटियों और कमियों के लिए पुरश्चरण नामक अध्याय के 30वें चरण में दिए गए क्षमा प्रार्थना मंत्र का उच्चारण करें।
36. सूर्य अर्घ्य
    पुरश्चरण नामक अध्याय के 36वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार सूर्य अर्घ्य करें।

पुरश्चरण की विधि

इस भाग में 16 रात्रियों की श्रीसूक्तम साधना के हर रात्रि के लिए निर्देश और विधि दी गई है। हर रात्रि के लिए आपके मंत्र, यज्ञ, तर्पण, अभिषेक इत्यादि भिन्न होंगे और मैंने इनको विधिवत लिखे हैं। हर रात्रि के प्रारम्भ में आपको एक तालिका मिलेगी जिसमें सभी मंत्र और उनके जप की संख्या, और यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्रियों का उल्लेख होगा।

रात्रि 1

पहले दिन अन्य दिनों की तुलना में अधिक समय लगता है क्योंकि आपके लिए सभी चरण नए हैं।

जप	
मंत्र	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम किशमिश 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफेद तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	यज्ञ नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. किशमिश, हवन सामग्री और तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। 5. यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री हिरण्यावर्णां इति
श्री सूक्त प्रथम मंत्रस्य चिक्लीत ऋषि, श्री महाविद्या

सर्वसिद्धि प्रदायै देवता, सर्वार्थ साधक शक्ति, श्री बीजं, भुवनेशी महाविद्या, ह्रीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्ध्यर्थ प्रथम मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम

से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री कर्दम चिक्लीत ऋषयै नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
भगवती श्री सर्वसिद्धिप्रदायै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
सर्वार्थ साधक शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
श्रीं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
भुवनेशी श्री विद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजोगुणाय नमः अन्तरारै मनसि।	हृदय
रसना ज्ञानेंद्रियाय नमः चेतसी।	मुंह (स्पर्श करते समय मुंह को थोड़ा खुला रखें)
वाक् कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ
मध्यम स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
भुतत्वाये नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
विद्या कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ह्रीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव

प्रवाहिनी मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उन्हें नीचे दी गई तालिका में देख सकते हैं।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ हिरण्यवर्णां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
श्रीं हरिणीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
ह्रीं सुवर्णरजतस्रजाम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
श्रीं चंद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें
ऐं जातवेदो कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
सौं: ममावह करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास—षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ *न्यास* नामक अध्याय में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	अंग विन्यास	विवरण
ॐ हिरण्यवर्णा हृदयाय नमः।		अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
श्रीं हरिणीं शिरसे स्वाहा।	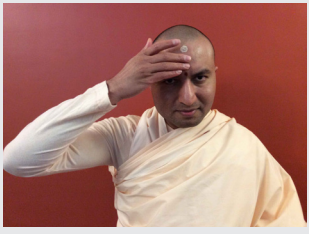	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
ह्रीं सुवर्णरजत-स्रजाम् शिखायै वषट्।		दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
श्रीं चंद्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं कवचाय हुं।		अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें। देवी पूजा में बायाँ हाथ दाएँ हाथ के ऊपर होना चाहिए। और देवता पूजा में दायाँ हाथ ऊपर होना चाहिए। यह मात्र मार्गदर्शन है, नियम नहीं।

संस्कृत (देवनागरी)	अंग विन्यास	विवरण
ऐं जातवेदो नेत्रत्रयाय वौषट्।	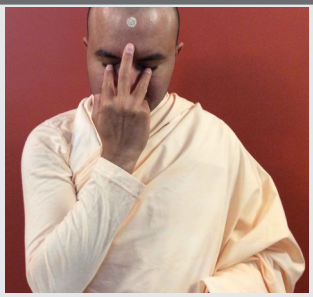	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें। नेत्रत्रयाय का अर्थ होता है, 'तीन नेत्र'।
सौः म आवह अस्त्राय फट्।		दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 2

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लू सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम सफेद चावल 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट काला तिल 50 ग्राम गुड़ 50 ग्राम सफेद चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सफेद चावल, हवन सामग्री, गुड और काले तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री तां म आवह इति श्री सूक्त द्वित्य मंत्रस्य श्री कर्दम चिक्लीत ऋषि, भगवती सर्वकाम प्रदायै देवी, ज्योति शक्ति, श्रीं बीज, कमला महाविद्या, क्लीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ द्वितीय मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादी न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री कर्दम चिक्लीत ऋषये नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
भगवती सर्वकामप्रदायै देव्यै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
ज्योतिशक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
श्रीं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
भुवनेश्वरी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजोगुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
श्रोत्र ज्ञानेंद्रियाय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
वाक् कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ
उच्स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
भुतत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
विद्या कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
क्लीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव
संकोचिनी मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उन्हें नीचे दी गई तालिका में देख सकते हैं।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ तां म आवह अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
श्रीं जातवेदो तर्जनीभ्यां स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
ह्रीं लक्ष्मीमनपगामिनीम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
श्रीं यस्यां हिरण्यं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
ऐं विन्देयं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
सौं: गामश्वं पुरुषानहम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ न्यास रात्रि 1 की मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ तां म आवह हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
श्रीं जातवेदो शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ह्रीं लक्ष्मीमनपगामिनीम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
श्रीं यस्यां हिरण्यं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
ऐं विन्देयं नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
सौः गामश्वं पुरुषानहम् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 3

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम बादाम 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफेद तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. बादाम, हवन सामग्री और सफेद तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री अश्वपूर्वां रथमध्यां इति श्रीसूक्त तृतीय मंत्रस्य श्री चिक्लीत कर्दम ऋषि, महालक्ष्मी देवता, पद्मावती शक्ति, श्रीं बीज, मातंगी महाविद्या, क्रों उत्कीलन, सर्वमंगलकारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ तृतीय मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)। नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री चिक्लीत कर्दम ऋषयै नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
महालक्ष्मी देवतायै नमः दद्वादशारे हृदि।	हृदय
पद्मावती शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
श्रीं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
मातंगी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजोगुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
स्वः ज्ञानेंद्रियाय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
वाक् कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ
मध्यम स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
आकाश तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
शान्ति कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
क्रों उत्किलनाय नमः पादयो:।	पांव
योनि मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उन्हें नीचे दी गई तालिका में देख सकते हैं।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ अश्वपूर्वां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
रथमध्यां तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
हस्तिनादप्रबोधिनीम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
श्रियं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
देवीमुपह्वये कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
श्रीर्मा देवि जुषताम् करतलकरपृष्ठ फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास-षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ अश्वपूर्वां हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ रथमध्यां शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
हस्तिनादप्रबोधिनीम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
श्रियं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
देवीमुपह्वये नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
श्रीर्मा देवि जूषताम् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 4

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम कमल गट्टा 100 हवन सामग्री 1 पैकेट काला तिल 50 ग्राम सफेद चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. कमल गट्टा, हवन सामग्री और काले तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री कांसोस्मिता इति श्रीसूक्त चतुर्थ मंत्रस्य श्री कर्दम चिक्लीत ऋषि, भगवती सर्व काम प्रदायै देवी, ह्रां बीज, चूडामणि शक्ति, महा शक्त्यै, महाविद्या, ह्रां बीज, सर्वमंगलकारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ चतुर्थ मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री कर्दम चिक्लीत ऋषये नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
भगवती सर्वकामप्रदायै देव्यै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
चूडामणि शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
ह्रां बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
महाशक्त्यै महाविद्यायै नमः अन्तरारे कण्ठे।	कंठ
सत्वगुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
नासिका ज्ञानेंद्रियाय नमः ज्ञानेंद्रिये।	नाक
कर कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ
मध्यम स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
भू तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
प्रवृत्तिं कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
श्रीं ह्रीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव

मोहिनी मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उन्हें नीचे दी गई तालिका में देख सकते हैं।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ कांसोस्मितां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
हिरण्यप्राकारामार्द्रां तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
ज्वलन्तीं तृप्तां मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
तर्पयन्तीम् अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
तामिहोपह्वये श्रियम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ कांसोस्मितां हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
हिरण्यप्राकारामार्द्रां शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
ज्वलन्तीं तृप्तां शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
तर्पयन्तीम् कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
तामिहोपह्वये श्रियम् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 5

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम सूखे नारियल का चूरा 100 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफ़ेद तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सूखे नारियल का चूरा, हवन सामग्री और सफ़ेद तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री चंद्रां प्रभासां यशसा इति श्रीसूक्तपंचम मंत्रस्य श्री असित ऋषि, विष्णु देवता, वं बीज, माया शक्ति, कुमारी महाविद्या, ब्लौं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ पंचम मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री असित ऋषये नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री विष्णु देवताय नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
माया शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
वं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
कुमारी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजोगुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
श्रोत्र ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
वाक् कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
सौम्य स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
आकाश तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
विघा कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ब्लौं उत्किलनाय नमः पादयो:।	पांव
द्राविणी मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ चंद्रां प्रभासां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
यशसा ज्वलन्तीं तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
श्रियं लोके मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
देवी जुष्टामुदाराम् अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।

तां पद्मनेमिं शरणम् प्रपद्दे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ चंद्रां प्रभासां हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
यशसा ज्वलंतीं शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
श्रियं लोके शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
देवी जुष्टामुदाराम् कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
तां पद्मनेमिं शरणम् प्रपद्दे नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 6

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।
यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम किशमिश 50 ग्राम बादाम 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट काला तिल 50 ग्राम सफेद चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. किशमिश, बादाम, हवन सामग्री और काले तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो इति श्री सूक्त षष्ठ मंत्रस्य ब्रह्माऋषि, सूर्यो देवता, ॐ बीज, तेजसः शक्ति, मातंगी महाविद्या, ह्रीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ षष्ठ मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
ॐ ब्रह्मा ऋषये नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सूर्योदेवताय नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
आं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
तेजसः शक्त्यै नमः दशारे नाभौ	नाभि
मातंगी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
तमोगुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
चक्षु ज्ञानेन्द्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
कर कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ
मृदुस्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
खंस्तत्वायै नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
शान्तिकलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ह्रीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव
सम्पुट मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
वनस्पतिस्तव वृक्षोथ तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
बिल्व तस्य फलानि मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
तपसा नुदन्तु अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
मायान्तरायाश्च कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
बाह्यालक्ष्मी करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
वनस्पतिस्तव वृक्षोथ शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
बिल्व तस्य फलानि शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
तपसा नुदन्तु कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
मायान्तरायाश्च नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
बाह्मलक्ष्मी अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 7

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम सफेद चावल 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफेद तिल 50 ग्राम काला तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सफेद चावल, हवन सामग्री और तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चंदन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री उपैतु मां देवसखः इति श्री सूक्त सप्तम मंत्रस्य मृकण्ड ऋषि, सर्व सम्पति पूरिण्यै देवता, सौं बीज, शिवा शक्ति, मातंगी महाविद्या, ऐं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ सप्तम मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
मृकण्ड ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
सर्व संपति पूरिण्यै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
सौं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
शिवा शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
मातंगी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
तमोगुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
रसना ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	मुंह (स्पर्श करते समय होंठों को थोड़ा खुला रखें)
कर कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	होंठ
मध्यम स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
जल तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
प्रतिष्ठा कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ऐं उत्किलनाय नमः पादयो:।	पांव

मत्स्य मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ उपैतु मां देवसखः अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
कीर्तिश्च तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
मणिना सह मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
प्रादुर्भूतोऽस्मि अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
राष्ट्रेऽस्मिन् कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ उपैतु मां देवसखः हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
कीर्तिश्च शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
मणिना सह शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
प्रादुर्भूतोऽस्मि कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
राष्ट्रेऽस्मिन् नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 8

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ		
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।	
संख्या	108 बार	
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी	200 ग्राम
	पूरे काजू	50 ग्राम
	हवन सामग्री	1 पैकेट
	कमल गट्टा	100
	काला तिल	50 ग्राम
	सफेद चन्दन	1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. काजू, कमल गट्टा, हवन सामग्री और तिल को मिला दीजिए। 2. पांच बड़े चम्मच पिघली हुई घी को इस मिश्रण में अच्छी तरह मिला दें। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।	

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री क्षुत्पिपासामलां इति श्रीसूक्त अष्टम मंत्रस्य नारदो ऋषि, सर्व सौभाग्यदायिन देवी, सां बीज,ऐश्वर्यै शक्ति, लक्ष्मी महाविद्या, ह्रीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ अष्टम मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
नारद ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
सर्व सौभाग्यदायिन्यै देव्यै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
सां बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
ऐश्वर्यै शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
लक्ष्मी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजोगुणाय नमः अंतरारे मनसि।	हृदय
चक्षु ज्ञानेंद्रियाय नमः ज्ञानेंद्रिये।	मुंह (स्पर्श करते समय होंठों को थोड़ा खुला रखें)
भग कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	उरुसन्धि (ग्रॉइन)
सौम्य स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
भू तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
प्रवृत्ति कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ह्रीं उत्कीलनाय नमः पादयोः।	पांव
सम्पुट मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ क्षुत्पिपासामलां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
ॐ ज्येष्ठामलक्ष्मीं तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
नाशयाम्यहम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
अभूतिमसमृद्धिं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
च सर्वां निर्णुद कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
मे गृहात् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ क्षुत्पिपासामलां हृदयाय नमः।	हृदय पर दायाँ हाथ रखें।

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ज्येष्ठामलक्ष्मीं शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
नाशयाम्यहम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
अभूतिमसमृद्धिं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
च सर्वां निर्णुद नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
मे गृहात् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 9

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 600 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. आज रात्रि की सभी आहुतियां केवल घी से ही दी जाती हैं.. 2. घी के साथ 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 3. यज्ञ के अन्त में 600 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। 4 यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।
तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।

मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री गन्धद्वारां दुराधर्षां इति श्रीसूक्त नवम मंत्रस्य मेधस ऋषि, श्री सर्वसिद्धि प्रदायै देवी, ह्रीं बीज, ह्रामरी शक्ति, कमला महाविद्या, क्लीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थं नवम मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
मेधस ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सर्वसिद्धि प्रदायै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
ब्रीं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
भ्रामरी शक्त्यै नमः दशारे नाभौ	नाभि
कमला महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजोगुणाय नमः अंतरारे मनसि।	हृदय
नासिका ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	नाक
पाणि कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	हाथ (दोनों हाथों को साथ लाकर जोड़ दें)
मृदु स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
भू तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
मोहिनी कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
क्लीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव
सम्पुट मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ गन्धद्वारां अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
दुराधर्षां तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
नित्यपुष्टां करीषिणीम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
ईश्वरीं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
सर्वभूतानां कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
तामिहोपह्वये श्रियम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ गन्धद्वारां हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
दुराधर्षां शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
नित्यपुष्टां करीषिणीम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
ईश्वरीं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
सर्वभूतानां नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
तामिहोपह्वये श्रियम् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 10

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम गुड 50 ग्राम किशमिश 50 ग्राम बादाम 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट काला तिल 50 ग्राम सफेद चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. गुड, किशमिश, बादाम, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में पांच बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री मनसः काममाकूतिं इति श्रीसूक्त दशम मंत्रस्य श्री वेद व्यास ऋषि ,श्री सर्व प्रियंकरैं देवी, क्रों बीजं, शताक्षी शक्ति, श्री सुन्दरी महाविद्या, श्रीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ दशम मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री वेद व्यास ऋषये नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सर्व प्रियंकर्यै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
क्रों बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
शताक्षी शक्त्यै नमः दशारे नाभौ	नाभि
श्री सुन्दरी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
श्रोत्र ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
मन कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	हाथ (दोनों हाथों को साथ लाकर जोड़ दें)
सौम्य स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
जल तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
अविद्या कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
श्रीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
योनि मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ मनसः अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
काममाकूतिं तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
वाचः सत्यमशीमहि मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
पशूनां रूपमन्नस्य अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
मयि श्रीः कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
श्रयतां यशः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ मनस: हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
काममाकूतिं शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
वाचः सत्यमशीमहि शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
पशूनां रूपमन्नस्य कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
मयि श्रीः नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
श्रयतां यशः अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 11

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम सूखे नारियल का चूरा 50 ग्राम इलाईची 50 ग्राम लौंग 20 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफेद तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सूखा नारियल, इलाईची, लौंग, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में पांच बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री कर्दमेन प्रजाभूता इति श्रीसूक्त एकादश मंत्रस्य श्री विष्णु ऋषि, श्री सर्व व्याधि विनाशिन्यै देवी, ह्रां बीजं, श्री महा सरस्वती देवता, रूं बीजं, इन्द्राणी शक्ति, भुवनेश्वरी महाविद्या, ऐं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थं एकादश मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री विष्णु ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सर्वव्याधि विनाशिन्यै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
ह्रां बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
इन्द्राणी शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
श्री भुवनेश्वरी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
सतो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
त्वक् ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
कर कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	हाथ (दोनों हाथों को साथ लाकर जोड़ दें)
मृदु स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
वायु स्तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
शान्ति कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ऐं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
सम्पुट मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
मयि संभव तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
कर्दम मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
श्रियं वासय अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
मे कुले मातरं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
पद्ममालिनीम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास-षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ कर्दमेन प्रजाभूता हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
मयि संभव शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
कर्दम शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
श्रियं वासय कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
मे कुले मातरं नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
पद्ममालिनीम् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 12

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम सूखे नारियल का चूरा 50 ग्राम किशमिश 50 ग्राम बादाम 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट काला तिल 50 ग्राम सफेद चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सूखा नारियल, किशमिश, बादाम, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में पांच बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री आपः सृजन्तु स्निग्धानि इति श्रीसूक्त द्वादश्य मंत्रस्य श्री अजस ऋषि, श्री महालक्ष्मी देवता, ह्रां बीज, शूलधारिणी शक्ति, पीताम्बरा महाविद्या, ल्हीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ द्वादश मंत्र जपे विनियोगः।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री अजस ऋषये नमः सहस्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री महालक्ष्मी देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
ह्रां बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
शूलधारिणी शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
पीताम्बर महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
त्वक् ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	गला (त्वक् का अर्थ होता है त्वचा। आप शरीर के खुले भाग का कहीं भी स्पर्श कर सकते हैं।)
गुदा कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
गंभीर स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
भू तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
प्रवृतिं कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
ल्हीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव
मत्स्य मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ आपः सृजन्तु अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
स्निग्धानि चिक्लीत तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
वस मे गृहे मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
नि च देवीं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
मातरं श्रियं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
वासय मे कुले करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ आपः सृजन्तु हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
स्निग्धानि चिक्लीत शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
वस मे गृहे शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
नि च देवीं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
मातरं श्रियं नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
वासय मे कुले अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 13

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह।। नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम गुड 50 ग्राम मधु 50 ग्राम सफेद चावल 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफेद तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. गुड, मधु, चावल, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में पांच बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं इति श्रीसूक्त त्रयोदश मंत्रस्य मेधस ऋषि, श्री सर्वसौभाग्यदायिन्यै देवी, द्रां बीज, भीमा शक्ति, ज्येष्ठा महाविद्या, ऐं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ त्रयोदश मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री मेधस ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सर्वसौभाग्यदायिन्यै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
द्रां बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
भीमा शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
ज्येष्ठा महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
घ्राणं ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	नाक
पाणिकर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से स्पर्श करें
दीन स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
वायुस्तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
पराशान्ति कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ऐं उत्किलनाय नमः पादयो:।	पांव

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
धेनु मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
पुष्टिं पिंगलां तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
पद्ममालिनीम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
चन्द्रां हिरण्मयीं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
लक्ष्मीं जातवेदो कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
म आवह करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
पुष्टिं पिंगलां शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
पद्ममालिनीम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
चन्द्रां हिरण्मयीं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
लक्ष्मीं जातवेदो नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
म आवह अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 14

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।। नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम बादाम 50 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट काला तिल 50 ग्राम सफेद चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. बादाम, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में पांच बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ सफेद चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री आर्द्रां य: करिणीं यष्टिं इति श्रीसूक्त चतुर्दश मंत्रस्य श्री वेद व्यास ऋषि, श्री सर्वाह्लादिन्यै देवी, रूं बीज, वारुणी शक्ति, श्री तारा महाविद्या, क्रीं उत्कीलन, श्री सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ चतुर्दश मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम

से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री वेद व्यास ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सर्वाह्लादिन्यै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
रूं बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
वारुणी शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
तारा महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
सतो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
श्रोत्र ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	कान
पद कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से स्पर्श करें।
मध्यम स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
वायुस्तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
विघा कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
क्रीं उत्किलनाय नमः पादयो:।	पांव

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
आकर्षिणी मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ आर्द्रां यः अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
करिणीं यष्टिं तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
सुवर्णां हेममालिनीम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
सूर्यां हिरण्मयीं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
लक्ष्मीं जातवेदो कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
म आवह करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ आर्द्रां यः हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
करिणीं यष्टिं शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
सुवर्णां हेममालिनीम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
सूर्यां हिरण्मयीं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
लक्ष्मीं जातवेदो नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
म आवह अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 15

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्। नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ	
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।
संख्या	108 बार
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी 200 ग्राम सूखे नारियल का चूरा 100 ग्राम हवन सामग्री 1 पैकेट सफेद तिल 50 ग्राम लाल चन्दन 1 छोटा टुकड़ा
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सूखे नारियल का चूरा, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में पांच बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. 108 आहुतियां देने के बाद अन्तिम आहुति के साथ लाल चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उसपर थोड़ा सा घी डालकर अग्नि में आहुति करें। 4. यज्ञ के अन्त में 200 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।

तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री तां म आवह जातवेदो इति श्रीसूक्त पंचदश मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषि, श्री सर्वशक्तयै देवी, ज़्रां बीज, धनदा शक्ति, मातंगी महाविद्या, श्रीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ पंचदश मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम

से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री ब्रह्मा ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री सर्वशक्तयै देवयै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
ज्रां बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
धनदा शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
मातंगी महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
रजो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय
त्वक् ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	शरीर के खुले भाग का कहीं भी स्पर्श कर सकते हैं।
पाद कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से स्पर्श करें।
मृदु स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
आकाश तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
परा शान्ति कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
श्रीं उत्किलनाय नमः पादयोः।	पांव

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
सम्पुट मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ तां म आवह अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
जातवेदो तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।
लक्ष्मीमनपगामिनीम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
यस्यां हिरण्यं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
विन्देयं पुरुषानहम् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास -षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग मंत्र न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ तां म आवह हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
जातवेदो शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
लक्ष्मीमनपगामिनीम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
यस्यां हिरण्यं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।
प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
विन्देयं पुरुषानहम् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

रात्रि 16

जप	
मंत्र:	ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं नमः। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् नमो श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ। ॐ आं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सौं रं वं श्रीं ॐ॥
संख्या	इस मंत्र का 1000 बार जप करें।

यज्ञ		
मंत्र	ऊपर दिए मंत्र का ही जप करें पर मंत्र के अन्त में ॐ स्वाहा जोड़ दें। अर्थात्, मंत्र का उच्चारण करें, ॐ स्वाहा बोलें और अग्नि में एक आहुति करें।	
संख्या	108 बार	
हवन के लिए आवश्यक सामग्री	घी	500 ग्राम
	सूखे नारियल का चूरा	100 ग्राम
	कमल गट्टा	50 ग्राम
	गुड	50 ग्राम
	बादाम	50 ग्राम
	इलाईची	20 ग्राम
	सफेद चावल	50 ग्राम
	हवन सामग्री	2 पैकेट
	काला तिल	50 ग्राम
	सफेद तिल	50 ग्राम
	सफेद चन्दन	1 छोटा टुकड़ा
	लाल चन्दन	1 छोटा टुकड़ा
	पूरा कोपरा या सूखा नारियल	1
निर्देश	*यज्ञ* नामक अध्याय में दिए गए निर्देशों का पालन करें। 1. सूखे नारियल का चूरा, कमल गट्टा, इलाईची, गुड, बादाम, चावल, हवन सामग्री और तिल को अच्छी तरह मिला दीजिए। 2. इस मिश्रण में 10 बड़े चम्मच पिघला हुआ घी मिला लीजिए। 3. इस रात्रि के मंत्र के साथ 108 बार आहुतियां करें। 4. क्योंकि यह अन्तिम रात्रि है 108 बार और इस मंत्र के साथ आहुतियां करें। ॐ महा देव्यै च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात्।	

	5. ऊपर दी गई आहुतियां देने के बाद दोनों (लाल और सफेद) चन्दन का टुकड़ा लें, उसे घी में डुबाएँ या उन पर थोड़ा सा घी डालकर 16वें रात्रि के मंत्र का उच्चारण करते हुए अग्नि में आहुति करें। 6. कोपरा या पूरे सूखे नारियल में एक छेद बनाएँ और उसमें थोड़े से घी के साथ पहले नम्बर के निर्देश में बनाए मिश्रन डाल दें। श्री सूक्तं के सभी 16 श्लोकों का उच्चारण करें और नारियल को अग्नि में अर्पित करें। 7. अन्त में 500 ग्राम में से बची हुई घी को अग्नि में अर्पित करें। यदि आपको लगता है कि अग्नि बुझ रही है तो घी डालकर उसे जीवित रखें।
तर्पण	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करें और उसके अन्त में 'तर्पयामि' जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 32वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय तर्पयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार तर्पण करें।
मार्जन या अभिषेक	
मंत्र	ऊपर दिए गए मंत्र का जप करके उसके अन्त में 'मार्जयामि' शब्द जोड़ दें।
निर्देश	मंत्र का उच्चारण करें, *पुरश्चरण* नाम के अध्याय के 33वें चरण में दिए निर्देश के अनुसार थोड़ा सा जल लें और उसे पात्र में वापस डालते समय मार्जयामि शब्द के उच्चारण के साथ उसी पात्र में डाल दें।
संख्या	11 बार मार्जन करें।

पुरश्चरण के सभी 36 चरणों का पालन करें। पर 16 वां चरण-संकल्प

केवल प्रथम रात्रि को ही करना है। अन्य सभी चरण वैसे ही रहेंगे। न्यास, विनियोग और मंत्र हर रात्रि के लिए अलग होंगे। मंत्र पहली तालिका में दी गई है। विनियोग और न्यास नीचे दिए गए हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्री य: शुचि: प्रयतो भूत्वा इति श्री सूक्त षोडश मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषि, श्री महा सरस्वती देवता, प्रूं बीज, सिद्धिदा शक्ति, श्री कमला महाविद्या, ह्रीं उत्कीलन, सर्व मंगल कारिण्यै भगवती लक्ष्मी प्रसाद सिद्धयर्थ षोडश मंत्र जपे विनियोग:।

विनियोग की विधि का पालन करते हुए अपनी दाईं हथेली में थोड़ा जल लें (*पुरश्चरण* नामक अध्याय के 18वें चरण में दिए गए निर्देश के अनुसार)।

नीचे दी गई तालिका के अनुसार ऋषयादि न्यास से आरम्भ करते हुए क्रम से न्यास करें।

ऋषयादि न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
श्री ब्रह्मा ऋषये नमः सहस्त्रारे शिरसि।	शीर्ष
श्री महा सरस्वत्यै देव्यै नमः द्वादशारे हृदि।	हृदय
प्रूँ बीजाय नमः षडारे योनौ।	ऊसन्धि (ग्रॉइन)
सिद्धिदा शक्त्यै नमः दशारे नाभौ।	नाभि
श्री कमला महाविद्यायै नमः षोडशारे कण्ठे।	कंठ
सतो गुणाय नमः अन्तरारे मनसि।	हृदय

संस्कृत (देवनागरी)	दाएँ हाथ से स्पर्श करें...
घ्राणं ज्ञानेंद्रिय नमः ज्ञानेंद्रिये।	शरीर के खुले भाग का कहीं भी स्पर्श कर सकते हैं।
पाद कर्मेन्द्रियाय नमः कर्मेन्द्रिये।	बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से स्पर्श करें ।
मृदु स्वराय नमः कंठमूले।	गले के सबसे निचले भाग को
जल तत्वाय नमः चतुरारे गुदे।	पीठ के निचले भाग (मूलद्वार या गुदा)। वस्त्र पहने रहिए और पीठ के सबसे निचले भाग को प्रतीकात्मक रूप से स्पर्श करें।
शान्ति कलायै नमः करतले।	बाईं हथेली
ह्रीं उत्किलनाय नमः पादयो:।	पांव
योनि मुद्रायै नमः सर्वांगे।	पूरे शरीर (अपने दाएँ हाथ को शरीर के ऊपरी भाग पर घुमाकर, दोनों हाथ से धीमे से ताली बजाएँ।)

अब कर न्यास करें। मुद्राएँ वही हैं जो इसी अध्याय के 19वें चरण (कर-शुद्धि) में दी गई हैं। आप उनके चित्र उस तालिका में देख सकते हैं। उनका विवरण नीचे तालिका में दी गई है।

कर न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
ॐ यः शुचिः अंगुष्ठाभ्यां नमः।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के आधार पर स्पर्श करें।
प्रयतो भूत्वा तर्जनीभ्याम् स्वाहा।	अंगूठे के पोर को तर्जनी के पोर से स्पर्श करें।

संस्कृत (देवनागरी)	दोनों हाथों से
जुहुयादाज्यमन्वहम् मध्यमाभ्यां वषट्।	अंगूठे के पोर को मध्यमा के पोर से स्पर्श करें।
सूक्तं पंचदशर्चं अनामिकाभ्यां हुं।	अंगूठे के पोर को अनामिका के पोर से स्पर्श करें।
च श्रीकाम: कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।	अंगूठे के पोर से कनिष्ठिका के पोर से स्पर्श करें।
सततं जपेत् करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।	बाएँ हाथ के पिछले भाग को दाएँ हाथ के पिछले भाग पर स्पर्श करें और धीमे से ताली मारें।

अब अन्तिम न्यास-षडंग मंत्र न्यास करें। इसकी मुद्राएँ रात्रि 1 में दी गई मुद्राओं के समान ही हैं। मैं इन्हें नीचे दी गई तालिका में आपके लिए दोबारा दे रहा हूँ।

षडंग न्यास

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
ॐ य: शुचि: हृदयाय नमः।	अपने हृदय पर दायाँ हाथ रखें।
प्रयतो भूत्वा शिरसे स्वाहा।	दाएँ हाथ से माथे को स्पर्श करें। तर्जनी को दूर रखें।
जुहुयादाज्यमन्वहम् शिखायै वषट्।	दाएँ हाथ की मुट्ठी बनाएँ और अंगूठे को बाहर रखें। अब अपने शीर्ष को अंगूठे की पोर से स्पर्श करें।
सूक्तं पंचदशर्चं कवचाय हुं।	अपने हाथों को आड़े करके दाएँ हाथ को बाएँ कंधे पर, और बाएँ हाथ को दाएँ कंधे पर स्पर्श करें।

संस्कृत (देवनागरी)	विवरण
च श्रीकाम: नेत्रत्रयाय वौषट्।	दाईं हथेली को फैलाकर, एक साथ तर्जनी से दाईं आंख को छूएँ, मध्यमा से माथे को, और अनामिका से बाईं आंख को स्पर्श करें।
सततं जपेत् अस्त्राय फट्।	दाएँ हाथ को सर के ऊपर से घुमाकर और अपने सामने लाएँ और हल्के से ताली मारें।

यदि आप उन लोगों में से एक हैं जिन्होंने 960 दिनों तक नियमों का पालन किया और इस साधना को विधिपूर्वक सम्पूर्ण किया है तो मैं आपसे कहना चाहूँगा कि आप विलक्षण व्यक्ति हैं। पिछले 27 वर्षों में मैं असंख्य साधकों से मिला हूँ पर मात्र 0.001% इस साधना को अन्त तक कर पाते हैं। सत्य तो यह है कि मैं आज तक केवल दो लोगों से मिला हूँ जिन्होंने इस साधना के पथ पर चलकर इसे विधिवत पूरा किया है।

यदि आप यहाँ तक पहुँच गए हैं और श्री सूक्तम् साधना पुस्तक में दिए गए निषेधाज्ञाओं और निर्देशों के अनुसार पूरा कर लिया है तो निश्चित देवी की कृपा आपके साथ है। मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ और सम्मान व्यक्त करता हूँ। क्योंकि आपने वह उपलब्धि की है जो सामान्य मनुष्य की क्षमता से परे है। माँ लक्ष्मी आपको आशीर्वाद दें!